Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XII, Issue No. 23, October-2016, ISSN 2230-7540

प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर के छात्र / छात्राओं का विकास

Usha Kumari[1]* Dr. Seema Pandey[2]

[1]Research Scholar, Satya Sai University, Shehore

[2]Dean

सारांश – नई शिक्षा नीति के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में कदम उठाए गए हैं जिनमें से ''अध्यापको की जबाबदेही'' विषय विचारणीय है। अतः आज के परिवेश में इस पर विचार करना समीचीन प्रतीत होता है।

शिक्षा के प्रतिवर्ष गिरते स्तर के लिए शिक्षक को जिम्मेदार माना जाता है। किसी भी कार्य की गुणवता बहुत कुछ जबाबदेही पर निर्भर करती है। जबाबदेही के अभाव में शिक्षण कार्य की प्रवृत्ति भी ऐच्छिक हो जाती है। बालक के व्यक्तित्व का विकास अध्यापक और उसकी जबाबदेही पर निर्भर करता है। किसी भी विद्यालय का भवन, पाठ्यक्रम तथा पर्यावरण कितना भी प्रभावशाली क्यों न हो जब तक शिक्षक कर्तव्यनिष्ठ तथा जवाबदेह नहीं होगें विद्यालय की उन्नति तथा शिक्षण स्तर ऊपर नहीं उठ सकता।

शिक्षा के क्षेत्र में जबाबदेही से तात्पर्य है कि शिक्षक, प्रधानाध्यापक/प्राचार्य तथा अन्य विद्यालय कार्यकता मानित निष्पादन हेतु अभिभावकों, नागरिकों या जनता के प्रति उत्तरदायी हों। प्रारंभिक स्तर पर यह शैक्षिक उत्पाद/निष्पादन/फल या परिणाम ''शिक्षा के गुणात्मक'' उद्देश्य से संबंधित है। एक शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह बालकों के सर्वांगीण विकास–शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, सांवेगिक तथा व्यावसायिक के प्रति प्रतिबद्ध समर्पित भाव से कार्य करे। वह विद्यार्थियों में केवल ज्ञान या कौशल विकसित करने तक ही सीमित न रहे, वरन् बालकों में मूल्यों का विकास भी करें। एक शिक्षक प्रत्यक्षतः अपनी संस्था के प्रति तथा अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों एवं समाज के प्रति उत्तरदायी है। यह एक प्रकार से ''नई अपेक्षा (न्यू डिमांड) मानी गई है। नवीन इस रूप में कि अतीत व वर्तमान समय की शैक्षिक परिणामों की अवधारणा में अंतर आया है। नई शिक्षा नीति (1986,1992) के अनुसार – ''अपने व्यवसाय के प्रति शिक्षकों में समर्पण भाव, लगाव तथा उच्च स्तरीय निष्पादन हो।'' इससे यह प्रश्न उभर कर सामने आते हैं कि वे कौन से क्षेत्र हैं, जिनके प्रति शिक्षक जबाबदेह या उत्तरदायी हों।

----------X----------

प्रस्तावना

बच्चों में जीवन मूल्यों के विकास हेतु ज्यादा सिखाना जिससे उनमें निम्न गुणों का विकास होता है भरोसेमंदी, विश्वसनीयता, गहराई, निंश्चिंतता, परवाह, करना, चरित्र निर्माण का अहसास, निष्ठा, उत्तरदायित्व, वफादारी, ईमानदारी, साहस आदि।

''भारत में शिक्षण व्यवसाय का समाज शास्त्र'' था । इसमें शिक्षा के सभी पक्षों यथा शिक्षा के व्यवसायीकरण, शिक्षक प्रशिक्षण कक्षा शिक्षण, शिक्षकों के उत्तरदायित्व, शिक्षकों का वर्तमान समाज में स्थान आदि पर चर्चा की गई। कि –''शिक्षा और राष्ट्रीय उद्देश्य में घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज की परिस्थितियों और व्यवस्थाओं में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन आए उनके फलस्वरूप भारतीय शिक्षा के उद्देश्यों कार्यक्रमों और व्यवस्थाओ में भी परिवर्तन आ रहे है। इन परिवर्तनों के सदंर्भ में जब एक शिक्षक के कार्य विषय में सोचते है। तो ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षक अब अपने परम्परागत कार्य को ही करके अपने उत्तरदायित्व की इतिश्री नहीं समझ सकता, क्योंकि अब उसे अनेक कार्यों और कर्त्तव्यों को पूर्ण करना हैं । शिक्षकों के मूल्यों में आमूलचूल परिवर्तन आए बिना शिक्षकों तथा शिक्षा व्यवस्था की समस्याओं का आधुनिक सामाजिक सदंर्भ में कोई सतोंषप्रद हल नहीं निकल सकता। शिक्षकों को यह सोचना आवश्यक है15 कि वर्तमान भारतीय समाज की आवश्यकताओं और विशेषताओ के सदंर्भ में वह किस प्रकार अपने इन दोनों प्रकार के कार्यों को समन्वित ढगं से सम्पादित कर सकता है।''

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया है कि शिक्षक को अपने कार्य करने की संस्था में कम से कम 40 घंटे प्रति सप्ताह उपस्थित रहना चाहिए रस्तोगी कमेटी के अनुसार ''योग्य व्यक्तियों को ही शिक्षण व्यवसाय में लाया जाना चाहिए। शिक्षक पूरे शिक्षण तंत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

साहित्य की समीक्षा

जॉन पोर्टर के अनुसार – जबाबदेही इस बात की गारंटी से सम्बन्धित है कि सभी विद्यार्थी बिना जातिगत भेद, सामाजिक स्तर की भिन्नता तथा आर्थिक स्तर के विद्यालय की सभी सुविधाओं का लाभ उठा सकें। जबाबदेही एक प्रक्रिया है उद्देश्य निर्धारण एवं उनके प्राप्त करने में उपयुक्त साधनों की उपलब्धता की तथा नियमित रूप से मूल्याकंन की पूर्व निर्धारित उद्देश्य प्राप्त हुए अथवा नहीं,।

www.ignited.in

कार एंड हंटर के अनुसार– ''शैक्षिक प्रक्रिया में प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा पर हुए व्यय का प्रभावी ढंग से उपयोग के लिए जिम्मेदार है।'' राजन् एवं धुन्ना के अनुसार जबाबदेही प्रत्येक व्यक्ति को सौंपे गये उत्तरदायित्व के निष्पादन के सदर्भ में प्रतिवेदन आधारित होती है।

श्रीवास्तव ने जबाबदेही को परिभाषित इस रूप में किया है कि शिक्षकों द्वारा नियोक्ता एवं समाज के प्रति शपथ से है कि वे उत्तम निष्पादन कर सकेगें। डॉर्लिन हैमांड तथा एसचर के अनुसार जबाबदेही प्रतिबद्धताओं का एक सैट है तो कि निम्न बातों से संबंधित है–

- कि विद्यार्थियों को सीखने के उत्तम अनुदेशनात्मक तरीकों को अपनाया जाएगा।
- हानिप्रद व्यवहारों को कम किया जाएगा।
- स्वयं को आंतरिक रूप से सही रूप में पहचानने की क्षमता प्रदान की जाएगी।

इसी प्रकार ड्रकर ने जबाबदेही को परिणाम प्राप्ति के उत्तरदायित्व से आंका है, लेविन ने किसी के भी प्रति निष्ठा तथा उत्तर देने की जिम्मेवारी माना है, एकेनेमी के अनुसार विद्यालयों में जबाबदेही से तात्पर्य शिक्षकों द्वारा सरकार द्वारा शिक्षा पर किए गए व्यय का लाभप्रद उपयोग से हैं।

सभी शैक्षिक व्यवस्थाऐं किसी न किसी प्रकार की जबाबदेही की मान्यता रखती हैं चाहे वह सरकारी हों या गैर सरकारी। शिक्षा के उद्धेश्यों को प्राप्त करने हेतु सभी की जबाबदेही निश्चित की गई है जिससे सभी घटक अपनी जिम्मेदारी का पूर्ण कर्त्तव्य परायणता से पालन करें।

शिक्षा के सभी घटकों में शिक्षक की अधिक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मानी गई है। शिक्षक को राष्ट्र निर्माता, समाज मार्गदर्शक एवं संस्कृति पोषक माना गया है। शिक्षक संस्कार रूपी जड़ों में खाद देकर महाप्राण शक्तियाँ बनाते हैं। हर बालक में अंतनिर्हित शक्तियाँ होती हैं। उन गुणों को अंकुरित करने में शिक्षक का महान योगदान होता है। शिक्षक विद्यार्थियों के लिए आदर्श होते हैं जिसका अनुगमन करते हुए विद्यार्थी अनायास ही शालीनता के साँचे में ढलने लगते हैं। वह बालक को ऐसी दृष्टि प्रदान करता है जो आगे चलकर जीवन में उन्हें महान बनाते हैं। शिक्षक मर्यादित उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए शिक्षारूपी संजीवनी का संचार करके महामंडित होता है। शिक्षक की महानता, गरिमा व गौरव का सीधा संबंध कर्तव्यनिष्ठ सेवा से है।

शक्षक की जबाबदेही का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत तथा गंभीर है फिर भी वे पाठ्यक्रम पूरा कराने, परीक्षा संबंधी तैयारी, उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करने, प्रगतिपत्र तैयार करने आदि तक ही अपना उत्तरदायित्व मानते हैं। वस्तुतः शिक्षक के उत्तरदायित्व किसी निश्चित सीमा में आबद्ध नहीं किए जा सकते। दैनिक डायरी भरना, पाठ योजना निर्मित करना, प्रार्थना सभा का संचालन करना, उपस्थिति रजिस्टर तैयार करना, शिक्षण कार्य करना, गृहकार्य जांचना, मूल्यांकन करना, सहशैक्षिक व शैक्षिक गतिविधियाँ आयोजित करना आदि अनेक ऐसे कार्य हैं जो स्वतः ही अध्यापन व्यवसाय से जुड़े हैं।

शिक्षक की जबाबदेही का आयाम यद्यपि एक पूर्ण मानक इकाई नहीं है तथापि इतना निश्चित है कि यदि शिक्षक स्वमूल्यांकन करते हुए अध्ययन अध्यापन करे तो जबाबदेही की कसौटी पर खरा उतर सकता है। अतः शिक्षकों का उत्तरदायित्व है कि वे बदलते शिक्षा मूल्यों के अनुरूप स्वयं को अद्यतन करते हुए नए जोश एवं नई उमंग के साथ अपनी योग्यतम शैक्षिक क्षमताओं से भावी पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त करें क्यो कि 21वीं सदी में भारत को हर क्षेत्र में विश्व का सिरमौर बनना है। देश की इस अपेक्षा को शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षकों की सक्रिय और सघन भूमिका ही पूरा कर सकती है। परन्तु साथ में उन्हें वर्तमान सदी की आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखना होगा। आज देश में सूचना तकनीक का जाल बिछ गया है। इसने हर क्षेत्र में प्रगति के नए द्वार खोल दिए हैं किन्तु इनमें प्रवेश हेतु शिक्षक की जिम्मेवारी बढ़ जाती है।

उपसंहार

शिक्षा का प्रथम एवं शाश्वत धर्म है ऐसी मानव संतति का सृजन करना जो नवीन के प्रति जिज्ञासु होए जिसमें ग्राह्यता का भाव हो, सृजनधर्मी, चिंतन, भविष्योन्मुख, मननशील हो साथ ही ऐसे मस्तिष्क का निर्माण करना जो स्वच्छ आलोचना करना तथा लक्ष्यों का सत्यापन करने में सक्षम हो, सत्य, असत्य में विभेद करने की विवेक क्षमता से युक्त हो। महान दार्शनिक जॉ प्याजे का कथन मार्गदर्शक का कार्य कर सकता है–''जब हम होने के लिए सीखने के स्थान पर निर्माण के लिए सीखने की शिक्षा प्राप्त करेंगे तभी जीवन पर्यन्त शिक्षा के सारत्व को मूर्त रुप प्रदान कर सकेगा।''

शिक्षा प्रगति का द्वार है। मानव को सच्चे अर्थों में मानव बनाने वाली शक्ति शिक्षा ही है। शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकासार्थ संजीवनी का कार्य करती है। मानव विकास के विभिन्न आयामों के सापेक्ष शिक्षा को तीन स्तरों पर विभक्त किया गया है यथा प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा। वास्तव में प्रांरभिक शिक्षा, शिक्षा रूपी मूल का वृक्ष है, माध्यमिक शिक्षा इस वृक्ष का तना एवं उच्च शिक्षा इस वृक्ष के फूल और फल है। शिक्षा के दायित्वों को भली भांति वहन करने वाला व्यक्ति शिक्षक होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

एम.देव सेनाधिपति (2001). ''ए गुड टीचर'' एजूकेशनल रिव्यू, सितम्बर। मुदालियर ए.एल. (1952–53), रिपोर्ट ऑफ सैकण्डरी एजूकेशन कमीशन, गर्वमेंट ऑफ इंडिया, न्यू देहली।

ख्वाजापीर एम. (1988). एकाउंटिबिलिटी इन टीचर एजूकेशन, दी इंडियन जर्नल फार टीचर एजूकेशन, वाल्यूम 1 नं.1 अगस्त।

कपिल, एच.के., (2004). अनुसंधान विधियाँ (व्यवहारपरक विज्ञानों में) वेदांत पब्लिकेशन्स लखनऊ, अध्याय 12 पृ. 147–148, 368

मयाशंकर सिंह (2007). अध्यापक शिक्षा असमंजस में, अध्ययन पब्लिशर्स, न्यू देहली।

www.ignited.in

माहेश्वरी अमृता (2003). शिक्षक प्रतिबद्धता तथा अकादमिक आदर्श, प्राइमरी शिक्षकः अंक 4, अक्टूबर, एन.सी.ई.आर.टी, देहली।

हौले जायसी एंड शावर्स प्रोफेशनल डवलपमेंट ऑफ टीचर्स प्रणति जर्नल ऑफ इंडियन एजूकेशन, वाल्यूम 29 नं.3 व 2003, एन.सी.ई.आर.टी नई दिल्ली

दवे आर. एच. (1998). काम्पीटेंसी वेस्ड एंड कमिटमेंट ओरियंटेड टीचर फॉर क्वालिटी स्कूल एजूकेशन, इनीसिएशन डॉक्यूमेंट एनसीटीई, न्यू देहली।

चंद्रा एन.डी. (1994). ट्रांसपैरेंसी एंड एकाउंटिबिलिटी इन हायर एजूकेशन, टीचर एजू. एट एलीमेंट्री स्टेज, विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा. लि. देहली।

चतुर्वेदी विराट विष्णु (1988). शिक्षक की जबावदेही, साहित्य परिचण, 16 सामयिक विशेषांक, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

नरेश कुमार (2003). बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का स्वरूप और शिक्षक का दायित्व, प्राइमरी शिक्षक, अक्टूबर अंक 4, एन.सी.ई. आर.टीदेहली।

लैसिजर एम.लिआन (1973). एकाउंटिबिलिटी एंड हयूमैनिज्म, ए प्रोडक्टिव एजूकेशनल काम्प्लीमेंटरली एकाउंटिबिलिटी सिस्टम प्लानिंग इन एजूकेशन, ई.टी.सी. पब्लिकेशन यू. एस.ए।

Corresponding Author

Usha Kumari*

Research Scholar, Satya Sai University, Shehore

E-Mail – chintuman2004@gmail.com